सत्ता तथा वंशनाम के आधार पर परिवार के प्रकार (Type of family based on power and dynasty name) :—

परिवार की सत्ता स्त्री के हाथ में होगी अथवा पुरुष के, तथा वंश का नाम पति के पक्ष से सम्बन्धित रहेगा अथवा पत्नी के पक्ष से, यह समस्या भी परिवारों के वर्गीकरण का एक प्रमुख आधार है। इस आधार पर परिवारों के दो प्रकारों का उल्लेख किया जा सकता है :

(i) मातृसत्तात्मक परिवार (Matriarchal Family) —

जिस परिवार में सामाजिक, आर्थिक तथा दायित्वों के क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की प्रधानता होती है, उसे मातृसत्तात्मक परिवार कहा जाता है। ऐसे परिवारों में कोई स्त्री ही परिवार की कर्ता होती है तथा उसी के द्वारा दूसरे सदस्यों के अधिकारों एवं कर्तव्यों का निर्धारण किया जाता है। परिवार की सत्ता प्रमुख रूप से किसी स्त्री के हाथ में होने के कारण ही ऐसे परिवारों को मातृसत्तात्मक कहा जाता है। यह परिवार साधारणतया मातृवंशीय भी होते हैं। इसका तात्पर्य है कि ऐसे परिवारों में वंश परम्परा किसी स्त्री सदस्य के नाम पर अथवा पत्नी पक्ष के किसी पुरुष के नाम पर चलती है। मातृसत्तात्मक परिवार का यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि ऐसे परिवारों में पुरुषों को कोई स्थान नहीं मिलता। वास्तव में पुरुषों को भी यहाँ पर्याप्त अधिकार तथा पारिवारिक सम्मान प्राप्त होता है पर यह अधिकार उन्हें अपने खत की स्त्रियों

Ajanta Oxford

से प्राप्त होता है ; इसलिए डा० गुर्वे ने कहा है कि पुरुष, मातृसत्तात्मक परिवारों में केवल स्त्रियों की ओर से सत्ता का उपयोग करता है। आज भारत की बहुत-सी जनजातियों में भी ऐसे परिवार पाये जाते हैं। इसमें नायर, खासी तथा असम के पूर्वी भागों में रहने वाली कुछ जनजातियाँ प्रमुख हैं। हिन्दू तथा ईसाई समूहों में इस प्रकार के परिवारों का प्रचलन कभी नहीं रहा। व्यावहारिक रूप से नैनीताल के थारू जनजाति में आज भी ऐसे परिवार के लक्षण काफी सीमा तक विद्यमान हैं।

(2) पितृसत्तात्मक परिवार (Patriarchal Family) —

पितृसत्तात्मक परिवार पुरुष प्रधान होते हैं। इनमें परिवार की सत्ता किसी पुरुष में निहित होती है जिसे परिवार का कर्ता कहा जाता है। ऐसे परिवारों में पुरुष कर्ता ही सदस्यों के अधिकारों तथा कर्तव्यों का निर्धारण करता है तथा उसी का परिवार की सम्पत्ति का उपयोग और वितरण पर अधिकार होता है। यहाँ वंश-परम्परा भी पिता के नाम तथा पिता के पक्ष से सम्बन्धित रहती है, इसलिए ऐसे परिवार पितृवंशीय भी होते हैं। पितृसत्तात्मक परिवारों की संख्या भारत में ही नहीं बल्कि संसार के सभी भागों में सबसे अधिक है। भारत की अधिकांश जनजातियाँ भी धीरे-धीरे पितृसत्तात्मक होती जा रही हैं।